मासिक पत्रिका दिसम्बर 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

एकता का सूत्रधार-स्वामी श्रद्धानन्द

(साभार : 'वैदिक सार्वदेशिक' लेख के कुछ अंश, दिसम्बर 2013)

-डॉ. धर्मपाल आर्य-पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.

संसार में कभी-कभी ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं जो अपने त्याग, तपस्या, परमार्थ एवं बलिदान से नये युग का निर्माण करते हैं। उनके पदचिन्हों पर चलकर आनेवाली पीढ़ियाँ अपने को धन्य मानती हैं। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक क्षेत्रों में नई दिशा प्रदान करने वाले महापुरुषों की श्रृंखला लम्बी है और हमें ऐसे महापुरुषों को श्रद्धापूर्वक स्मरण करना चाहिए। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महामानव थे। वे एक ऐसे पारसमणि थे जिसके स्पर्श से अनेक पाप पंक में निमग्न मनुष्य स्वर्ण बन गये और उनका तेजोदीप्त निर्मल सुरभित जीवन दूसरों के काम में लग गया। ऐसे ही एक महामानव थे स्वामी श्रद्धानन्द, जो मात्र एक बार स्वामी दयानन्द के ओजस्वी, तेजस्वी स्वरूप को देखकर, उसके अकाट्य तर्कों से प्रभावित होकर, उनकी ईश्वर और धर्म की व्याख्या सुनकर उनके हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द का पूर्वनाम मुंशीराम था। अनेक दुर्व्यसनों से ग्रस्त मुंशीराम का जीवन स्वामी दयानन्द के उपदेशामृत का पान करके सुवर्णमय हो गया। उनका सारासंसार ही आलोकित हो गया।

वकील मुंशीराम की मानसिक और बौद्धिक चेतना की जागृति उच्च शैल शिखर से आविर्भूत शुभ्र जलस्रोत के समान थी जो कल-कल करती चारों दिशाओं में फैल गई। चेतना के उस अजस्र स्रोत से मानव कल्याण की जलधारा शिवालिक की उच्च पर्वत श्रृंखलाओं से उतरकर हरिद्वार के विस्तीर्ण प्रान्तर में ठहर गई और उसने चारों ओर रम्य वातावरण की सृष्टि की। जिस दिन पवित्र सन्यासाश्रम में प्रवेश किया, उसी दिन सारे संसार को एक परिवार समझने, लोक लज्जा को छोड़कर लोक सेवा में दत्तचित होने का व्रत धारण कर लिया था।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में अनेक मोड़ आए। वे पौराणिक जगत से निकल कर आर्य जगत के सिरमौर बने। यहाँ पर उन्होंने राष्ट्रीय विचारधारा को नई ऊर्जा तथा देश की रक्षा में तत्पर नागरिक देने के लिए वैदिक शिक्षा पद्धति पर गुरुकुल की स्थापना की। जब राजनैतिक जीवन की क्षुद्रताएँ सामने आईं और उन्हें अपना अभीष्ट प्राप्त न होता दिखा तो हिन्दू महासभा, हिन्दू संगठन, आर्य संगठन, दलितोद्धार, अछूतोद्धार तथा धर्म प्रावर्तन की दिशा में आगे बढ़ चले।

स्वामी जी ने पत्रकारिता की महत्ता को अपने जीवन के प्रारम्भिक चरणों में ही पहचान लिया था। वे शब्द की शक्ति से परिचित थे। इसलिए उन्होंने 18 फरवरी, 1886 को जालंधर से 'सद्धर्म साप्ताहिक' प्रारम्भ किया। इस पत्र की रीति-नीति को देखकर लाला सांईदास ने कहा था-'यह पत्र समाज में नया युग लाएगा।' 'लाला सांईदास की विलक्षण परीक्षण शक्ति की उद्भावना को स्वामी श्रद्धानन्द ने सकारात्क दिशा में प्रवृत्त होकर 'सद्धर्म प्रचारक' को पढ़कर एक सज्जन के आक्षेप करने पर कि 'दयानन्द के इतने कट्टर शिष्य बनते हो, पर महर्षि ने तो अपना सारा साहित्य हिन्दी में लिखा है, आप सद्धर्म प्रचारक उर्दू में क्यों निकालते हो उन्होंने 'प्रचारक' को 1907 में हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया तथा इसमें राजनीति की गतिविधियों को प्रमुखता दी गई। हरिश्चन्द्र 'प्रचारक' के संपादक थे। 30 जनवरी, 1915 से यह पत्र पुनः हरिद्वार से प्रकाशित होने लगा। यह पत्र आर्य समाज की सार्वभौम नीतियों का नियामक था। महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के भावों और विचारों का सम्पूर्ण प्रतिफलन उसमें होता था। 1904 में 'सत्यवादी' नाम साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया गया। इसके प्रथम संपादक पं. पद्म सिंह शर्मा थे। स्वामी श्रद्धानन्द के संपादन में 1920 में अंग्रेज़ी साप्ताहिक 'दि लिबरेटर'

निकाला। स्वामी जी से प्रेरणा लेकर इन्द्र जी ने 'अर्जुन' 'विजय' 'सत्यवादी' साप्ताहिक निकाले। स्वामी जी के दौहित्र श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने 'नवयुग' नामक एक दैनिक का संपादन किया। 1926 में स्वामी जी की हत्या हो जाने पर वीर सावरकर ने अपने छोटे भाई डॉ. नारायण सावरकर को रत्नगिरि बुलाया और उन्हें दो पत्र निकालने की प्रेरणा दी। इसमें एक पत्र 'श्रद्धानन्द' था। यह पत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी की पावन स्मृति में प्रारम्भ किया गया था। इसके प्रथम अंक में उनका अपना लेख "श्रद्धानन्द जी की हत्या" भी प्रकाशित हुआ था।

स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर थे। वास्तव में वे यह मानते थे कि एक ही भाषा होने से एकता का सूत्रपात किया जा सकता है। 6 दिसम्बर, 1913 को भागलपुर में हुए चतुर्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर भाषण करते हुए स्वामी जी ने उस समय कहा था-'बिना एक राष्ट्रभाषा के प्रचार के राष्ट्र का संगठित होना ऐसा ही दुष्कर है जैसा बिना जल के मीन का जीवन। आर्यभाषा ही राष्ट्रभाषा बन सकती है इस भाषा को हम केवल हिन्दुओं की ही भाषा नहीं प्रत्युत सारे देश की राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं।" स्वामी श्रद्धानन्द भाषायी एकता को राष्ट्रीय एकता का एक प्रमुख सूत्र मानते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जात-पांत के भेदभाव को दूर करना चाहते थे। उनके विचार से इसका एकता के मार्ग में बाधा पड़ती है। 26 दिसम्बर, 1919 को अमृतसर कांगेस को अपने स्वागताध्यक्ष भाषण में उन्होंने अछूतोद्धार को कांग्रेसके कार्यक्रम का आवश्यक अंग बनाने का प्रस्ताव रखा था।

वे एकता स्थापना के सूत्रों के अन्तर्गत ही 'अछूतोद्धार' को मानते थे। उनका दिल उस समय रो उठा था, जब पं. मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में आयोजित हिन्दु संगठन की सभा में एक अछूत को अपने विचार प्रकट करने से रोक दिया गया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने 31 मार्च, 1919 की घटनाओं का विवरण इस प्रकार दिया था- '31 को पचास हजार मातमदारों के साथ मैं कब्रिस्तान की ओर चला, मुसलमान शहीद का जनाज़ा, हिन्दू बराबर कन्धा दे रहे थे। शहीद की कब्र पर उसके खून के पैबन्द से बरसों के बिछड़े हुए दिल एक दूसरे से जुड़ गये थे।

4 अप्रैल, 1919 की घटना हिन्दू मुसलिम एकता का एक मुस्लिम विशिष्ट उदाहरण है। स्वामी जी महाराज ने दिल्ली की शाही जामा मस्जिद से वेदमंत्र 'त्वं हि नः पिता वसो, त्वं माता शतक्रतो' के साथ अपना संदेश आरम्भ किया था। इसके बाद उन्होंने फतेहपुरी मस्जिद में भी जनता को सम्बोधित किया था।

सन् 1922 में अजनाला के पास 'गुरु का बाग' को लेकर सिक्खों ने मोर्चा लगाया था। उसमें भाग लेने के लिए स्वामी जी अमृतसर पहुँचे और आकालतख्त से सुप्रसिद्ध व्याख्यान द्वारा दृढ़ता प्रदान की जिस समय अब्दुल रशीद अपनी मूर्खता भरी चेष्ठा से इस्लाम के माथे पर कलंक का टीका लगा रहा था, उधर गोहाटी में अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन में उनको आमंत्रित किया। वे तो रूग्णावस्था के कारण न जा सके परन्तु तार द्वारा जो संदेश भिजवाया, वह एकता का यज्ञ है- "On Hindu-Muslim unity depends future well being of India" उन्होंने हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनके विचार उदार थे। भारत भू के अभिमान थे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सत्यनिष्ट ईश्वर विश्वासी, निर्भीक, एकता के सूत्रधार, राष्ट्रनायक स्वामी श्रद्धानन्द जी को हमारी विनत श्रद्धांजलि।

विश्व की पहली रिकार्डिंग - वेद का पहला मंत्र

1876 में थॉमस अल्वा एडिसन ने ग्रामोफोन की खोज की, जिसे आजकल आप टेपरिकार्डर के तौर पर जानते हैं। वह उत्साहित था कि सबसे पहली आवाज इसमें किसी महापुरुष की हो, वह एडिसन मैक्समूलर के पास गया और उनकी आवाज रिकॉर्ड करने को कहा, मैक्समूलर ने कहा, 'मेरी अकेले की आवाज रिकॉर्ड करने में क्या सार है, एक सभा की जाए और सवाल जवाब के माध्यम से जो संवाद हो वो रिकॉर्ड किया जाए जो यादगार होगा। जैसे पूरी दुनिया में कार्य शुरु करने से पहले अलग अलग देवताओं का नाम लेकर शुरुआत की जाती है, ठीक वैसे ही दुनिया की पहली रिकार्डिंग की शुरुआत मैक्समूलर ने ये बोलकर की-**अग्निमिले पुरोहितं यज्ञस्व देवमऋत्विजम्! होतारं रत्नधातमम्॥**

जी हाँ - ऋग्वेद का प्रथम मंत्र बोलकर एक विदेशी ने अपनी सबसे बड़ी खोज की शुरुआत की और कहा कि मैं भारत के ऋषि मुनियों को प्रणाम करता हूँ-विश्व को इतनी अद्‌भुत ज्ञान संपदा देने के लिए। अब हम अपने अंतर्मन में भी झांके कि क्या हमको आज से पहले ये पता था कि वेदों का प्रथम मन्त्र कौनसा है जो कि एक विदेशी जानता था। हम ये भी देखें कि आप अपने जन्मदिन व उद्‌घाटन रिबन, केक काटकर करते हैं या वेद का मन्त्र बोलकर। आइये, वापस अपनी संस्कृति की और लौटिए।

दिसम्बर 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
02	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	ऐतरेय उपनिषद का सार
09	डॉ. वागीश आचार्य	ईश्वर है या नहीं - (DVD)
16	**स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस** (कार्यक्रम पृष्ठ 4 पर)	
23	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	पुनर्जन्म - एक वैदिक दृष्टिकोण
30	श्री संजय शास्त्री (9756777958)	यस्य छाया अमृतम् - ईश्वर की छाया अमृतमयी है।

नवम्बर मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्री अनिल वर्मा	31,000/-	श्री शादी लाल गेरा	2,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
M/s एम.आर. एसोसिएट्स	6,200/-	श्री सुनील बिसला	1,100/-	श्री विजय भाटिया	1,000/-
M/s Aspiring People C/o सुश्री इन्दु वाधवा	5,100/-	श्रीमती रक्षा पुरी	1,100/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
		श्री एस.सी. गर्ग	1,100/-	श्री राजेन्द्र सिंह	500/-
श्री के.के. गुलाटी	3,000/-	श्रीमती शील गुलाटी	1,100/-	श्री सुख सागर ढींगरा	500/-
श्री वीरेन्द्र कुमार सूद	2,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-	श्री राजन सपरा	500/-
श्री मनोहर लाल छाबड़ा	2,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-	श्री आर. जगमोहन	500/-

नवम्बर माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 1,100/- ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 2,000/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ M/s के.एल. फाउण्डेशन ₹ 21,000/-

अन्य दान: ❖ श्रीमती वन्दना सरन 1 Wheel Chair

महत्वपूर्ण सूचना:

अन्य आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम:

1. ग्रेटर कैलाश-2 — 28 नवम्बर से 02 दिसम्बर 2018
2. अमर कॉलोनी — 30 नवम्बर से 02 दिसम्बर 2018
3. कालका जी — 02 एवं 06 से 09 दिसम्बर 2018
4. श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली — 03 दिसम्बर से 16 दिसम्बर 2018

नोट : आप सभी दानदाताओं से अनुरोध है कि आप दान का चैक **"आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1"** के पक्ष में दें तथा कार्यालय में श्री अमर सिंह पहल, कोषाध्यक्ष अथवा श्री अजय कुमार/श्री सुरेन्द्र प्रताप को दे दें तथा रसीद ले लें।

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश –1 (पंजी.)

B-31/C, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली–110048
फोन : 29240762, 46678389 ईमेल : samajarya@yahoo.in • वेबसाइट : www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं अभिनन्दन समारोह

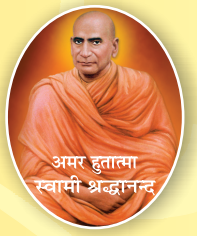

दिनांक : 16 दिसम्बर 2018, रविवार

प्रातः 8:15 बजे से दोपहर 1:15 बजे तक

इस शुभ अवसर पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है। आप कार्यक्रम में सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सम्मिलित होकर समारोह की शोभा बढ़ाएं।

कार्यक्रम

सन्ध्या – हवन	:	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम–धर्माचार्य प्रात: 8:15 से 9:30 बजे तक
जलपान एवं प्रसाद	:	प्रात: 9:30 बजे से 10:00 बजे तक

बलिदान दिवस समारोह

प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 1:15 बजे तक

मुख्य अतिथि	:	**श्रीमती संतोष मुंजाल एवं परिवार**	
विशिष्ट अतिथि	:	**श्रीमती शिखा राय** – अध्यक्षा, स्थाई समिति, द.दि.न.नि.	
		श्री धर्मपाल आर्य – प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा–दिल्ली प्रदेश	
विशेष आमंत्रित	:	श्री रामनाथ सहगल, श्री विनय आर्य, श्री के.सी. तनेजा (पूर्व निगम पार्षद), श्री अजय सहगल, श्री रजनीश गोयनका, श्री आनन्द चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, श्री नरेन्द्र घई	
भजन	:	**श्री लक्ष्मीकान्त**	प्रात: 10:00 से 11:00 बजे तक
अमृत पॉल आर्य शिशु शाला	:	**बच्चों की प्रस्तुति**	प्रात: 11:00 से 11:15 बजे तक
अभिनन्दन एवं प्रवचन	:	**श्री जयपाल विद्यालंकार**	प्रात: 11:15 से 12:00 बजे तक
विशेष प्रवचन	:	**डा. महेश विद्यालंकार**	दोपहर 12:00 से 12:45 बजे तक
विषय	:	**महामानव स्वामी श्रद्धानन्द**	
सम्बोधन	:	**आचार्य धर्मपाल आर्य / श्री विनय आर्य**	दोपहर 12:45 से 01:10 बजे तक
मंच संचालन	:	**आचार्य वीरेन्द्र विक्रम**	
धन्यवाद एवं शान्ति पाठ	:	**श्री विजय लखनपाल**–प्रधान आर्य समाज	दोपहर 01:10 से 01:15 बजे तक
ऋषि लंगर	:	मध्यान्ह 1:15 बजे	
सौजन्य	:	(श्री सत्यदेव विद्यालंकार जी के परिवार के द्वारा)	

निवेदक

संरक्षक
योगेश मुन्जाल, इन्द्र सैन साहनी

प्रधान
विजय लखनपाल

मंत्री
राजेन्द्र कुमार वर्मा
विजय भाटिया (उपमंत्री)

कोषाध्यक्ष
अमर सिंह पहल

आर्य समाज महिला सत्संग

संतोष रहेजा (प्रधाना)
अमृत पाल (कार्यवाहक प्रधाना)
प्रेम शर्मा (मंत्री)

वेद प्रचार समिति